दर्द

कभी गुज़र के तो देखो
बड़ी रौनके हैं इन फकीरों के डेरे में,
आज हमने यूं ही खुशी कर ली,
आते जाते रहा करो साहब
आने जाने में क्यों कमी कर ली
इश्क वो नहीं जो तुझे मेरा कर दे
इश्क वो है जो तुझे किसी और का होने न दे
क्योंकि बेमौत मर जाते
वो आवाज़ रोने वाले
अब दिल उठ सा गया है
इन बेरंग लोगों से
ना वफा करते हैं
ना रिहा करते हैं
गुजर जाएगा ये ग़म
ज़रा इत्मीनान तो रख
जब खुशी नहीं रूकी
तो गम भी न रूकेगी
ये तसल्ली कर ली।
आज हमने यूं ही खुशी कर ली।।

साक्षी मिश्रा
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी–तृतीय वर्ष
अध्यक्षा, आंतरिक शिकायत समिति
मैत्रेयी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

ध्यान रखना

ये जो तुम समुंदर की मिट्टी जैसे मखमली होठों से
झूठ बोलते हो
कहते हो सब ठीक है
ये तो तुम्हें भी पता है और मुझे भी
क्या सच है और क्या नहीं
जानते हैं हम दिल में दर्द है
और ये दर्द छुपाने की कोशिश करते हो ।
कोशिश ना करना छुपाने की
सबके सामने जो तुम ये खुशमिज़ाज चेहरा
दिखाती हो
काबू तुमसे जुल्फें नहीं होती
जिन्दगी की बात करती हो
जरा सी जिंदगी है
अरमान बहुत हैं
हमदर्द कोई नहीं
इंसान बहुत हैं
दिल का दर्द सुनाए तो सुनाए किसे?
जो दिल के करीब हैं, उन्हें बताएं कैसे?

साक्षी मिश्रा
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी–तृतीय वर्ष
अध्यक्षा, आंतरिक शिकायत समिति
मैत्रेयी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।